E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

नचिकेता का चरित्र चित्रण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

अध्यात्मविद्या के क्षेत्र में कठोपनिषद् एक ऐसा ग्रन्थ है जो सम्पूर्ण उपनिषद् साहित्य को आलोकित करता है। इसका प्रमुख चरित्र पात्र नचिकेता है जो वाजश्रवा का पुत्र है। नचिकेता के चरित्र की कतिपय विशेषताओं का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है-

(क) आत्मबलिदानी व्यक्तित्व- पिता वाजश्रवा के द्वारा सर्वमेध यज्ञ समाप्ति के समय गोदान वेला में पुत्र नचिकेता के हित को ध्यान में रखकर पिता के द्वारा वृद्ध, दुग्ध देने में असमर्थ गायों का दान करते देख नचिकेता के हृदय में पिता की भावी गति की चिन्ता उत्पन्न हो जाती है। वह जानता है कि इससे पिता को स्वर्ग तो मिलेगा ही नहीं, नरक की असह्य यात्रा भोगनी पड़ सकती है। एक सच्चे पुत्र के कर्तव्य को ध्यान में रख, पिता के क्रोधी स्वभाव की परवाह न कर वह उनसे पूछता है कि आप मुझे किसे देंगे? तीन बार तक इसी प्रश्न को करने से क्रुद्ध पिता से उसे मृत्यु को देने का कथन किया। पिता के कल्याण की कामना से नचिकेता ने मृत्युदेव के पास जाने का निश्चय किया और आत्मसुख का परित्याग कर स्व का बलिदान कर दिया। पिता और पुत्र के ऐसे उदाहरण भारतीय संस्कृति की उदात्त कल्पनाएँ हैं।

(ख) आज्ञाकारी पुत्र-क्रोधावस्था में भी पिता के द्वारा दिये गये आदेश के पालनार्थ वह पुत्र यमराज के द्वार पहुँच गया। यद्यपि वह जानता था कि पिता का यह आदेश अविवेक अवस्था में दिया गया है फिर भी पुत्र के लिये पिता की हर आज्ञा शिरोधार्य है, मानकर उसे यमलोक जाने में संकोच नहीं हुआ।

(ग) पितृभक्ति साधक- यमराज की गोद में पहुँचाने वाले पिता के प्रति भी भारतीय पुत्र का हृदय श्रद्धा एवं भक्ति से पूरित रहता है इसका उदाहरण नचिकेता है। यम के द्वारा तीन वर माँगने का

आदेश मिलते ही वह अपने पिता की मानसिक तुष्टि, क्रोधशान्ति और प्रसन्नता माँगता है। प्रायः समस्त सांसारिकों की प्रवृत्ति है कि वह वरदान माँगते समय पहले सांसारिक ऐश्वर्य सुख ही चाहता है। किन्तु नचिकेता ने वह कुछ नहीं माँगा अपितु माँगा उस पिता का परितोष जिसने उसे मृत्यु के मुख में डाला। यह उनकी पितृभक्ति साधना की पराकाष्ठा है।

(घ) अनासक्त योगी-अल्पवयस्क नचिकेता की सर्वप्रमुख विशेषता है उसकी सांसारिक अनासक्ति एवं आत्मज्ञान की प्यास। तृतीय वर के रूप में उसने आत्मा के विषय में जिस रहस्यात्मक (गूढ़) तथ्य को प्रकट करने का आग्रह किया उससे यम चकित रह गया। उसे कल्पना भी नहीं थी कि वह ऐसा कोई वर माँग सकता है। अतः उसने उसकी सांसारिक एवं स्वर्गीय सुख भोगों का प्रलोभन देकर उसे डिगाना चाहा, किन्तु नचिकेता ने एक-एक वस्तु की निःसारता, अनित्यता एवं उसके दोषों का वर्णन कर यम के समस्त प्रलोभनों के सामने नहीं झुका। रमणी-सुख, दीर्घ आयुष्य एवं धन समृद्धियाँ शरीर क्षय एवं अनित्य फलकारक भाग ही तो है। उसके तर्क को सुनकर आत्मविद्या ज्ञान के स्वाभिमानी यम को कहना ही पड़ा-"हे नचिकेता तुम सत्य धारण करने वाले हो, तुम्हारे जैसा प्रश्नकर्ता मुझे प्राप्त हो"।

(ङ) दृढ़ निश्चयी-नचिकेता दृढ़ निश्चयी बालक है। उसने मृत्यु के पास जाने का निश्चय कर लिया तो पिता के रोकने पर भी वहाँ पहुँचकर ही माना। इसी प्रकार उसने मृत्यु के पश्चात् आत्मा की सत्ता जानने का निश्चय कर लिया तो उसे जानकर ही सन्तुष्ट हुआ। किसी भी प्रलोभन में पड़कर उसने अपना निश्चय नहीं त्यागा।

(च) निर्भयता- निर्भयता भी नचिकेता के चरित्र की विशेषता है। लोग जिस मृत्यु के नाम से काँप उठते हैं, उसी के पास अर्थात् मृत्यु के देवता यमराज के पास जाने में नचिकेता को कोई भय नहीं हुआ।

(छ) तर्कशील-नचिकेता में तर्क करने की शक्ति पर्याप्त मात्रा में है। यमराज ने मृत्यु का रहस्य न पूछने के लिए जो भी प्रलोभन दिये, नचिकेता ने उन सभी का सन्तोष जनक उत्तर दिया और यमराज को निरुत्तर बना दिया। यमराज ने मृत्यु के पश्चात् आत्मा के रहस्य को जानने में देवों की असमर्थता का उल्लेख किया तो नचिकेता ने इसका निराकरण करने के लिए तर्क उपस्थित किया कि इस रहस्य

का ज्ञाता आपके अतिरिक्त दूसरा नहीं है। देवता इस रहस्य को नहीं जानते हैं अतः किसी भी देवता की सेवा से यह रहस्य प्राप्त नहीं हो सकता है। इसलिए मैं आप से ही यह रहस्य जानना चाहता हूँ। इस प्रकार नचिकेता के चरित्र में अनेक अनुकरणीय विशेषताएँ है। नचिकेता का चरित्र भारतीय बालकों के लिए ही नहीं, सभी के लिए अनुकरणीय और उपयोगी है। नचिकेता के चरित्र से सभी शिक्षा और प्रेरणा ले सकते हैं।